

बी.एच.आई.सी.-109: भारत का इतिहास-V (c.1550-1605)

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: BHIC-109

सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.आई.सी. -109 /ए.एस.एस.टी./TMA/2025-26

अधिकतम अंक: 100

नोट: यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

- 1) सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी के दौरान दक्षिण भारत में नायक राजनीति के उदय पर चर्चा कीजिए। 20
- 2) ज़ब्त प्रणाली पर एक टिप्पणी लिखिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

- 3) भारत में मुगल आगमन की पूर्व संध्या पर फ़ारसी भाषा और साहित्य के विकास पर चर्चा कीजिए। 10
- 4) अकबर के शासनकाल के दौरान मुगल साम्राज्य के क्षेत्रीय विस्तार पर एक नोट लिखिए। 10
- 5) मध्यकालीन दक्कन के गांवों की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं? चर्चा कीजिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

- 6) अखलाक साहित्य 6
- 7) असम बुरुंजी 6
- 8) दूसरा अफगान साम्राज्य 6
- 9) खंडीय राज्य सिद्धांत 6
- 10) जमींदारी अधिकार 6

# BHIC-109

## SOLVED ASSIGNMENT 2025-26

**Disclaimer/ Note:** These Sample Answers/Solutions are prepared by Private Teacher/Tutors/Authors for the help and guidance of the student to get an idea of how he/she can answer the Questions given the Assignments. We do not claim 100% accuracy of these sample answers as these are based on the knowledge and capability of Private Teacher/Tutor. As these solutions and answers are prepared by the private teacher/tutor so the chances of error or mistake cannot be denied. Please consult your own Teacher/Tutor before you prepare a Particular Answer and for up-to-date and exact information, data and solution. Student should must read and refer the official study material provided by the university. **Owner- <https://motherpublication.in/> - whatsapp- 8529719732, 99922-90905**

### सत्रीय कार्य-I

**Q.1 -** सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी के दौरान दक्षिण भारत में नायक राजनीति के उदय पर चर्चा कीजिए।

**ANS.-** सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में दक्षिण भारत के राजनीतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया, जिसका केंद्र बिंदु विजयनगर साम्राज्य का पतन और नायक राज्यों का उदय था। 'नायक' मूल रूप से विजयनगर साम्राज्य के अधीन सैन्य गवर्नर या सामंत हुआ करते थे, जिन्हें तेलुगु भाषी योद्धा वंशों से नियुक्त किया जाता था। उन्हें 'अमरम' नामक भूमि का एक हिस्सा प्रशासनिक और सैन्य खर्चों के लिए दिया जाता था, जिसके बदले में वे सम्राट को सैन्य सहायता प्रदान करते थे। इस प्रणाली को 'अमर-नायक प्रणाली' के नाम से जाना जाता था, जो दिल्ली सल्तनत की 'इक्ता' प्रणाली से काफी मिलती-जुलती थी।

**नायक राजनीति के उदय के कारण:**

- विजयनगर साम्राज्य का पतन:** 1565 में तालीकोटा के युद्ध में विजयनगर साम्राज्य की विनाशकारी हार ने केंद्रीय सत्ता को अत्यधिक कमजोर कर दिया। इस पराजय के बाद, साम्राज्य का ढाँचा बिखर गया और दूर-दराज के प्रांतों पर केंद्रीय नियंत्रण लगभग समाप्त हो गया। इस राजनीतिक शून्य का लाभ उठाते हुए, शक्तिशाली नायकों ने धीरे-धीरे अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करनी शुरू कर दी।
- अमर-नायक प्रणाली का स्वरूप:** इस प्रणाली ने नायकों को अपने-अपने क्षेत्रों में पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान की। वे अपने क्षेत्रों में कर वसूलने, कानून और व्यवस्था बनाए रखने और अपनी सेना रखने के लिए अधिकृत थे। इस स्वायत्तता ने उन्हें समय के साथ अपनी शक्ति को मजबूत करने और स्वतंत्र शासक बनने की महत्वाकांक्षा पालने का अवसर दिया।

**ALL SOLVED ASSIGNMENT, GUESS PAPER, PROJECT  
HAND WRITTEN SCAN PDF, HARDCOPY BY POST  
VISIT- [motherpublication.in](https://motherpublication.in/) / [mothernotes.in](https://mothernotes.in)**

3. **आर्थिक स्वतंत्रता:** नायक अपने क्षेत्रों से प्राप्त राजस्व का एक बड़ा हिस्सा अपने पास रखते थे। इससे उन्हें न केवल विशाल सेनाओं को बनाए रखने में मदद मिली, बल्कि उन्होंने इस धन का उपयोग भव्य मंदिरों, किलों और महलों के निर्माण में भी किया, जिससे उनकी प्रतिष्ठा और वैधता में वृद्धि हुई।

### प्रमुख नायक राज्य और उनकी विशेषताएँ:

सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, कई प्रमुख नायक राज्यों का उदय हुआ, जिनमें मदुरै, तंजावुर (तंजौर), और गिंगी (सेंजी) सबसे महत्वपूर्ण थे।

- **मदुरै के नायक:** ये सबसे शक्तिशाली और लंबे समय तक शासन करने वाले नायकों में से थे। तिरुमलाई नायक (1623-1659) इस वंश के सबसे प्रसिद्ध शासक थे, जिन्होंने मदुरै को अपनी राजधानी बनाया। उन्होंने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की और कला, वास्तुकला और साहित्य के महान संरक्षक बने। मदुरै का मीनाक्षी अम्मन मंदिर और तिरुमलाई नायक पैलेस उनके शासनकाल के दौरान निर्मित स्थापत्य के अद्भुत उदाहरण हैं। उनकी वास्तुकला में द्रविड़ और इस्लामी शैलियों का अनूठा मिश्रण देखने को मिलता है।
- **तंजावुर के नायक:** तंजावुर के नायकों ने भी विजयनगर की सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाया। वे साहित्य, संगीत और कला, विशेष रूप से तंजावुर चित्रकला शैली के महान संरक्षक थे। रघुनाथ नायक और विंजय राघव नायक इस वंश के प्रमुख शासक थे। उन्होंने कावेरी डेल्टा के उपजाऊ क्षेत्र पर शासन किया, जिससे वे आर्थिक रूप से बहुत समृद्ध हुए।
- **गिंगी (सेंजी) के नायक:** गिंगी के नायकों ने उत्तरी तमिलनाडु के एक बड़े हिस्से पर नियंत्रण स्थापित किया। उनका मुख्यालय गिंगी का किला था, जो अपनी अभेद्यता के लिए प्रसिद्ध था। कृष्णाप्पा नायक इस वंश के संस्थापक माने जाते हैं। उन्होंने भी विजयनगर की प्रशासनिक और सांस्कृतिक परंपराओं को जारी रखा, लेकिन उन्हें लगातार बीजापुर और गोलकुंडा के सुल्तानों के हमलों का सामना करना पड़ा।

### नायक राजनीति का स्वरूप:

नायक राजनीति मूल रूप से एक सैन्यीकृत और सामंती व्यवस्था थी। शासक अपनी वैधता विजयनगर के उत्तराधिकारी के रूप में प्रस्तुत करते थे, लेकिन व्यवहार में वे स्वतंत्र थे। उन्होंने स्थानीय रीति-रिवाजों और परंपराओं को संरक्षण दिया और तेलुगु संस्कृति को तमिल क्षेत्रों में बढ़ावा दिया। उन्होंने भव्य गोपुरम वाले विशाल मंदिर परिसरों का निर्माण करके अपनी धार्मिक और राजनीतिक शक्ति का प्रदर्शन किया। यह काल दक्षिण भारत में गहन राजनीतिक अस्थिरता, निरंतर युद्धों के साथ-साथ अभूतपूर्व सांस्कृतिक और स्थापत्य विकास का भी साक्षी रहा। नायकों ने उन मंदिरों का भी जीर्णोद्धार कराया जिन्हें दिल्ली के सुल्तानों ने नष्ट कर दिया था। अंततः, सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक, ये नायक राज्य भी आंतरिक संघर्षों और बाहरी आक्रमणों (विशेषकर मराठों और मुगलों) के कारण कमजोर हो गए और उनका पतन हो गया।

## Q.2 - जब्त प्रणाली पर एक टिप्पणी लिखिए।

**ANS.-** 'जब्त' प्रणाली मुगल काल के दौरान, विशेष रूप से सम्राट अकबर के शासनकाल में स्थापित की गई एक भू-राजस्व निर्धारण और संग्रह की एक मानकीकृत प्रणाली थी। इसे 'दहसाला प्रणाली' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि इसमें पिछले दस वर्षों के

आंकड़ों का औसत निकाला जाता था। इस प्रणाली का मुख्य वास्तुकार अकबर का प्रतिभाशाली वित्त मंत्री, राजा टोडरमल था, जिसने शेरशाह सूरी द्वारा शुरू किए गए सुधारों को और विकसित और संस्थागत रूप दिया। यह प्रणाली मुगल साम्राज्य के एक बड़े हिस्से, विशेष रूप से लाहौर से इलाहाबाद तक के मुख्य प्रांतों, मालवा और गुजरात में लागू की गई थी।

### जब्त प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ:

1. **भूमि की पैमाइश:** इस प्रणाली का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम भूमि की सटीक पैमाइश था। भूमि को मापने के लिए बांस के डंडों का उपयोग किया जाता था, जिनके सिरे लोहे के छल्लों से जुड़े होते थे ताकि वे मौसम के अनुसार सिकुड़ें या फैलें नहीं। इससे माप में सटीकता सुनिश्चित होती थी। भूमि की मानक इकाई 'बीघा' थी।
2. **भूमि का वर्गीकरण:** पैमाइश के बाद, भूमि को उसकी उर्वरता और खेती की निरंतरता के आधार पर चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता था:
  - **पोलज:** यह सर्वोत्तम प्रकार की भूमि थी जिस पर हर साल नियमित रूप से खेती की जाती थी।
  - **परौती:** यह वह भूमि थी जिसे अपनी उर्वरता वापस पाने के लिए एक या दो साल के लिए खाली छोड़ दिया जाता था।
  - **चचर:** यह वह भूमि थी जो तीन से चार वर्षों तक बंजर पड़ी रहती थी।
  - **बंजर:** यह सबसे कम उपजाऊ भूमि थी जिसे पांच या उससे अधिक वर्षों से जोता नहीं गया था। इन बाद की दो श्रेणियों (चचर और बंजर) पर खेती को प्रोत्साहित करने के लिए रियायती दरों पर राजस्व लगाया जाता था, जो धीरे-धीरे बढ़कर पूरी दर तक पहुँच जाता था।
3. **राजस्व का निर्धारण (दहसाला):** राजस्व दरें तय करने के लिए, पिछले दस वर्षों (1570-1580) के दौरान प्रत्येक फसल की औसत उपज और स्थानीय बाजार में उनकी औसत कीमतों का पता लगाया गया। इस दस-वर्षीय औसत उपज का एक-तिहाई हिस्सा राज्य के हिस्से के रूप में निर्धारित किया गया था। यह निर्धारण प्रत्येक 'दस्तुर' (आकलन मंडल) के लिए अलग-अलग किया जाता था, जो समान कृषि-जलवायु परिस्थितियों वाले क्षेत्रों का एक समूह था।
4. **नकद में संग्रह:** जब्त प्रणाली की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि भू-राजस्व की मांग नकद में तय की जाती थी। किसानों को अपनी उपज बेचकर निर्धारित राशि का भुगतान करना पड़ता था। इससे मुगल साम्राज्य में मुद्राकरण और बाजार अर्थव्यवस्था को काफी बढ़ावा मिला। किसानों को ऋण प्राप्त करने में भी आसानी हुई, जिसे वे वार्षिक किश्तों में चुका सकते थे।

### जब्त प्रणाली के गुण और दोष:

#### गुण:

- **निश्चितता और पूर्वानुमेयता:** इस प्रणाली ने राज्य और किसान दोनों के लिए निश्चितता प्रदान की। राज्य को पता था कि उसे कितना राजस्व मिलेगा, और किसान को पता था कि उसे कितना भुगतान करना है।
- **किसानों का संरक्षण:** इसने किसानों को स्थानीय अधिकारियों द्वारा मनमाने ढंग से कर लगाने से बचाया।

- **प्रशासनिक दक्षता:** मानकीकृत प्रक्रियाओं ने राजस्व प्रशासन को सुव्यवस्थित और अधिक कुशल बना दिया।

**दोष:**

- **कठोरता:** राजस्व की मांग निश्चित थी, भले ही फसल खराब हो जाए। हालांकि खराब फसल के मामले में राहत का प्रावधान था, लेकिन इसे लागू करना हमेशा आसान नहीं होता था।
- **उच्च लागत:** पैमाइश और विस्तृत रिकॉर्ड रखने की प्रक्रिया महंगी और जटिल थी, जिसके लिए एक बड़े प्रशासनिक तंत्र की आवश्यकता थी।
- **सीमित प्रयोज्यता:** यह प्रणाली केवल उन्हीं क्षेत्रों में प्रभावी रूप से लागू की जा सकती थी जहाँ भूमि की पैमाइश संभव थी। इसलिए, यह पूरे साम्राज्य में लागू नहीं की गई थी।

संक्षेप में, जब्त प्रणाली मुगल भू-राजस्व प्रशासन में एक महत्वपूर्ण नवाचार थी। इसने एक व्यवस्थित और अपेक्षाकृत निष्पक्ष ढाँचा प्रदान किया, जिसने साम्राज्य की वित्तीय नींव को मजबूत किया और अकबर के शासनकाल में स्थिरता और समृद्धि में योगदान दिया।

## सत्रीय कार्य-II

**Q.3 - भारत में मुगल आगमन की पूर्व संध्या पर फारसी भाषा और साहित्य के विकास पर चर्चा कीजिए।**

**ANS.-** भारत में 1526 में मुगलों के आगमन से पहले, फारसी भाषा और साहित्य एक सुस्थापित और समृद्ध परंपरा के रूप में मौजूद थे। इसका विकास मुख्य रूप से दिल्ली सल्तनत (1206-1526) के संरक्षण में हुआ, जब यह शासक वर्ग, प्रशासन और बौद्धिक विमर्श की प्रमुख भाषा बन गई। गजनवियों द्वारा लाहौर को फारसी संस्कृति का केंद्र बनाने के साथ ही भारत में इस भाषा की नींव पड़ चुकी थी, लेकिन दिल्ली सल्तनत ने इसे संस्थागत रूप प्रदान किया। सुल्तानों ने ईरान और मध्य एशिया से कवियों, विद्वानों और इतिहासकारों को अपने दरबार में आमंत्रित किया, जिससे भारत में एक जीवंत भारतीय-फारसी (इंडो-पर्सियन) साहित्यिक संस्कृति का उदय हुआ।

प्रारंभ में, साहित्य ईरानी मॉडलों और विषयों से प्रभावित था, लेकिन समय के साथ इसमें भारतीय संवेदनाओं, बिंबों और विषयों का समावेश होने लगा। इस संश्लेषण के सबसे बड़े प्रतीक अमीर खुसरो (1253-1325) थे, जिन्हें 'तूती-ए-हिंद' (भारत का तोता) कहा जाता है। खुसरो ने अपनी कविताओं में भारतीय संगीत, ऋतुओं, वनस्पतियों और सामाजिक रीति-रिवाजों का खूबसूरती से वर्णन किया। उन्होंने फारसी काव्य को भारतीय संदर्भों से समृद्ध किया और साथ ही हिंदवी (हिंदी का प्रारंभिक रूप) में भी रचनाएँ कीं।

इस काल में इतिहास-लेखन ('तवारीख') की विधा भी खूब फली-फूली। जियाउद्दीन बरनी की 'तारीख-ए-फिरोजशाही' और मिन्हाज-उस-सिराज की 'तबकात-ए-नासिरी' जैसे ग्रंथ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त, सूफी संतों ने अपने उपदेशों के लिए फारसी का उपयोग किया, जिससे यह भाषा अभिजात वर्ग से निकलकर आम लोगों के बीच भी पहुँची। इस प्रकार, जब बाबर ने भारत में कदम रखा, तो उसे एक ऐसी साहित्यिक और प्रशासनिक विरासत मिली, जिस पर मुगलों ने एक शानदार इमारत का निर्माण किया।

### Q.4 - अकबर के शासनकाल के दौरान मुगल साम्राज्य के क्षेत्रीय विस्तार पर एक नोट लिखिए।

**ANS.-** सम्राट अकबर (शासनकाल 1556-1605) के अधीन मुगल साम्राज्य का क्षेत्रीय विस्तार एक सुनियोजित और निरंतर प्रक्रिया थी, जिसने इसे उपमहाद्वीप की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति बना दिया। अकबर ने सैन्य अभियानों, कूटनीति और विलय की एक मिश्रित नीति के माध्यम से साम्राज्य की सीमाओं को अभूतपूर्व रूप से फैलाया।

अपने शासनकाल के आरंभ में, अकबर ने 1556 में पानीपत की दूसरी लड़ाई में हेमू को हराकर दिल्ली और आगरा पर अपनी पकड़ मजबूत की। इसके बाद के दो दशकों में उसका ध्यान मध्य और उत्तरी भारत पर केंद्रित रहा। उसने मालवा (1561) और गोंडवाना (1564) जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। अकबर ने राजपूत राज्यों के प्रति बल और सुलह की नीति अपनाई। चित्तौड़ (1568) और रणथंभौर (1569) जैसे शक्तिशाली किलों पर सैन्य विजय के साथ-साथ उसने कई राजपूत घरानों, जैसे आमेर और बीकानेर, के साथ वैवाहिक और राजनीतिक गठबंधन भी किए, जिससे साम्राज्य को स्थिरता मिली।

1570 के दशक में, अकबर ने अपना ध्यान पश्चिम और पूर्व के समृद्ध प्रांतों की ओर लगाया। उसने गुजरात (1572-73) पर विजय प्राप्त की, जो अपने व्यापार और बंदरगाहों के लिए सामरिक रूप से महत्वपूर्ण था। इसके तुरंत बाद, उसने बिहार और बंगाल (1574-76) के अफगान शासकों को पराजित कर इन उपजाऊ क्षेत्रों को साम्राज्य में मिला लिया। अपने शासन के अंतिम चरण में, अकबर ने उत्तर-पश्चिमी सीमा को सुरक्षित करने पर ध्यान केंद्रित किया, जिसमें काबुल (1585), कश्मीर (1586), सिंध (1591) और कंधार (1595) पर नियंत्रण स्थापित करना शामिल था। अंततः, उसने दक्कन की ओर कदम बढ़ाया और खानदेश, बरार तथा अहमदनगर के कुछ हिस्सों को भी जीत लिया। 1605 में उसकी मृत्यु तक, मुगल साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी तक फैल चुका था।

### Q.5 - मध्यकालीन दक्कन के गांवों की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं? चर्चा कीजिए।

**ANS.-** मध्यकालीन दक्कन के गाँव, सल्तनत और मुगल काल के दौरान, भारतीय उपमहाद्वीप की ग्रामीण संरचना में अपनी विशिष्ट विशेषताओं के कारण अलग स्थान रखते थे। ये गाँव केवल कृषि बस्तियाँ ही नहीं, बल्कि सुव्यवस्थित सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक इकाइयाँ थे जो काफी हद तक आत्मनिर्भर थीं। इनकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं:

**1. वतन प्रणाली और ग्राम प्रशासन:** दक्कनी गाँव का प्रशासन 'वतन' नामक वंशानुगत अधिकार प्रणाली पर आधारित था। गाँव का सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी 'पाटिल' (या पटेल) होता था, जो गाँव का मुखिया था। यह एक वंशानुगत पद था और पाटिल का मुख्य उत्तरदायित्व राज्य के लिए भू-राजस्व एकत्र करना तथा गाँव में कानून-व्यवस्था बनाए रखना था। प्रशासनिक कार्यों में उसकी सहायता 'कुलकर्णी' करता था, जो गाँव का लेखाकार था। कुलकर्णी का पद भी वंशानुगत होता था और वह भूमि के रिकॉर्ड, राजस्व भुगतान और गाँव के अन्य खतों का हिसाब-किताब रखता था।

**2. भूमि अधिकार और सामाजिक पदानुक्रम:** भूमि स्वामित्व के आधार पर ग्रामीण समाज स्पष्ट रूप से स्तरीकृत था। पदानुक्रम में शीर्ष पर 'मिरासदार' थे, जिनके पास गाँव की भूमि पर स्थायी और वंशानुगत अधिकार थे। वे ग्राम समुदाय के मूल सदस्य माने जाते थे और ग्राम प्रशासन में उनकी महत्वपूर्ण आवाज होती थी। इनके विपरीत, 'उपरी' थे जो अस्थायी काश्तकार थे। वे बाहरी माने जाते थे और

उनके पास भूमि पर कोई वंशानुगत अधिकार नहीं होता था। वे अक्सर मिरासदारों की भूमि पर खेती करते थे और उनकी तुलना में अधिक भू-राजस्व चुकाते थे।

**3. बलुता प्रणाली और आत्मनिर्भरता:** दक्कन के गाँवों की सबसे अनूठी विशेषता 'बलुता प्रणाली' थी। यह एक पारंपरिक व्यवस्था थी जिसके तहत गाँव के कारीगरों और सेवा प्रदाताओं, जिन्हें 'बलुतेदार' कहा जाता था, को उनकी सेवाओं के बदले नकद मजदूरी नहीं मिलती थी। इसके बजाय, उन्हें फसल कटाई के समय कृषि उपज का एक निश्चित हिस्सा ('बलुता') दिया जाता था। इन बलुतेदारों में लोहार, बढ़ई, कुम्हार, नाई, धोबी और चर्मकार जैसे बारह पारंपरिक व्यवसायी शामिल थे। इस प्रणाली ने गाँव को अपनी अधिकांश जरूरतों के लिए आत्मनिर्भर बना दिया, जिससे एक मजबूत अंतर्निर्भर सामुदायिक जीवन को बढ़ावा मिला। इन प्रणालियों ने मिलकर दक्कन के गाँवों को एक स्थिर और स्थायी चरित्र प्रदान किया जो सदियों तक कायम रहा।

## सत्रीय कार्य-III

### Q.6 - अखलाक साहित्य

**ANS.-** 'अखलाक' एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ 'नैतिकता' या 'आचरण' है। अखलाक साहित्य, इस्लामी दुनिया में विकसित हुई साहित्य की एक विधा है जो व्यावहारिक ज्ञान, नैतिकता, सुशासन और उचित सामाजिक आचरण से संबंधित है। यह साहित्य मुख्य रूप से शासकों, अभिजात वर्ग, प्रशासकों और शिक्षित व्यक्तियों को मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए लिखा जाता था। इसमें इस बात पर जोर दिया जाता था कि एक व्यक्ति को समाज में, परिवार में और राज्य के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन कैसे करना चाहिए। इस विधा की जड़ें यूनानी दर्शन (विशेष रूप से अरस्तू और प्लेटो) में हैं, जिसे इस्लामी विद्वानों ने अपने धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भ में अनुकूलित किया। नासिर अल-दीन अल-तुसी (13 वीं शताब्दी) द्वारा रचित 'अखलाक-ए-नासिरी' इस विधा का सबसे प्रसिद्ध और प्रभावशाली ग्रंथ माना जाता है। यह ग्रंथ भारत सहित पूरे फारसी-भाषी जगत में लोकप्रिय हुआ और बाद के कई लेखकों के लिए एक मॉडल बना। मुगल भारत में भी इस परंपरा को जारी रखा गया और कई 'अखलाक' ग्रंथ लिखे गए।

### Q.7 - असम बुरुंजी

**ANS.-** 'बुरुंजी' असम के अहोम साम्राज्य (1228-1826) से जुड़े ऐतिहासिक इतिवृत्त या पांडुलिपियाँ हैं। 'बुरुंजी' अहोम भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है "प्राचीन ज्ञान का भंडार"। ये इतिवृत्त प्रारंभ में अहोम भाषा में और बाद में असमिया भाषा में लिखे गए। बुरुंजी भारत में ऐतिहासिक लेखन की एक दुर्लभ परंपरा का प्रतिनिधित्व करती हैं, क्योंकि इनमें घटनाओं का कालानुक्रमिक और तथ्यात्मक विवरण मिलता है, जो दक्षिण-पूर्व एशिया की ऐतिहासिक लेखन परंपराओं से मिलता-जुलता है। इनमें राजनीतिक घटनाओं, युद्धों (विशेषकर मुगलों के साथ संघर्ष), शाही वंशों, प्रशासनिक निर्णयों और सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं का विस्तृत रिकॉर्ड होता है। अहोम-मुगल संघर्षों के बारे में बुरुंजी में दिए गए विवरण मुगल इतिवृत्तों जैसे 'पादशाहनामा' और 'आलमगीरनामा' से मेल खाते हैं, और अक्सर अतिरिक्त जानकारी भी प्रदान करते हैं। ये पांडुलिपियाँ सांची पेड़ की छाल पर लिखी जाती थीं और इन्हें अहोम राज्य में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था।

### Q.8 - दूसरा अफगान साम्राज्य

**ANS.-** "दूसरा अफगान साम्राज्य" शब्द का उपयोग आम तौर पर भारत में सूर साम्राज्य (1540-1556) के लिए किया जाता है। इस साम्राज्य की स्थापना शेरशाह सूरी ने 1540 में मुगल सम्राट हुमायूँ को कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध में निर्णायक रूप से पराजित करने के बाद की थी। पहला अफगान साम्राज्य लोदी वंश (1451-1526) था। शेरशाह, जिसका मूल नाम फरीद खान था, एक असाधारण रूप से प्रतिभाशाली अफगान सरदार था जो अपनी सैन्य प्रतिभा और प्रशासनिक कौशल के बल पर सत्ता के शिखर तक पहुँचा। हालाँकि उसका शासनकाल केवल पाँच वर्षों (1540-1545) का था, लेकिन उसने एक अत्यंत केंद्रीकृत और कुशल प्रशासन की नींव रखी। उसने मुद्रा सुधार (रुपया और दाम का मानकीकरण), सड़कों का निर्माण (विशेषकर ग्रांड ट्रंक रोड), और एक व्यवस्थित भू-राजस्व प्रणाली की शुरुआत की, जिसे बाद में अकबर ने भी अपनाया। 1555 में हुमायूँ द्वारा सत्ता पर पुनः कब्जा करने के बाद सूर साम्राज्य का पतन हो गया।

### Q.9 - खंडीय राज्य सिद्धांत

**ANS.-** खंडीय राज्य (Segmentary State) सिद्धांत एक राजनीतिक मॉडल है जिसका उपयोग इतिहासकारों और मानवविज्ञानियों द्वारा कुछ पूर्व-आधुनिक राज्यों, विशेष रूप से मध्यकालीन दक्षिण भारत के चोल साम्राज्य जैसे राज्यों की प्रकृति को समझने के लिए किया जाता है। इस सिद्धांत को भारतीय संदर्भ में लोकप्रिय बनाने का श्रेय इतिहासकार बर्टन स्टीन को दिया जाता है, जिन्होंने इसे अफ्रीकी अध्ययनों से अपनाया था। इस सिद्धांत के अनुसार, खंडीय राज्य में राजनीतिक शक्ति और संप्रभुता का एक एकल केंद्र नहीं होता, बल्कि यह कई अधीनस्थ खंडों में विभाजित होती है। राजा की वास्तविक राजनीतिक शक्ति केवल केंद्रीय क्षेत्र तक ही सीमित होती है, जबकि बाहरी क्षेत्रों में स्थानीय सरदारों का नियंत्रण होता है जो केवल राजा की अनुष्ठानिक या धार्मिक संप्रभुता को स्वीकार करते हैं। इन खंडों में शक्ति का स्तर संकेंद्रित वृत्तों (concentric circles) की तरह घटता जाता है। इस मॉडल में एक मजबूत नौकरशाही का अभाव होता है और स्थानीय स्वायत्तता बहुत अधिक होती है।

### Q.10 - जमींदारी अधिकार

**ANS.-** मुगल काल में, 'जमींदार' शब्द का प्रयोग भूमि पर वंशानुगत दावा रखने वाले विभिन्न वर्गों के लोगों के लिए किया जाता था। जमींदारी अधिकार केवल भूमि के स्वामित्व तक ही सीमित नहीं थे, बल्कि इसमें कई सामाजिक और आर्थिक विशेषाधिकार भी शामिल थे। इन अधिकारों में सबसे प्रमुख था भू-राजस्व के संग्रह में हिस्सा प्राप्त करना। जमींदार राज्य की ओर से किसानों से भू-राजस्व वसूलते थे और इसका एक हिस्सा (लगभग 10%, जिसे 'नानकार' या 'मलिकान' कहा जाता था) अपनी सेवाओं के बदले में अपने पास रख लेते थे। इसके अलावा, उनके पास अपनी व्यक्तिगत भूमि ('खुदाकाशत') भी होती थी, जिस पर वे या तो खुद खेती करते थे या मजदूरों से करवाते थे, और इस पर उन्हें रियायती दर पर राजस्व देना पड़ता था। जमींदारों से यह भी अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने क्षेत्रों में कानून और व्यवस्था बनाए रखें और आवश्यकता पड़ने पर राज्य को सैन्य सहायता प्रदान करें। ये अधिकार वंशानुगत थे और इन्हें बेचा या गिरवी रखा जा सकता था।